Methods of Teaching Economics

अर्थशास्त्र की शिक्षण - विधियाँ (methods of Teaching Economics) — अर्थशास्त्र - शिक्षण की विधियाँ साज-सज्जा, उपागम, विषय - वस्तु के संगठन, शिक्षक एवं शिष्यों की अभिवृत्तियों, शिक्षक - शिष्य संबंध, छात्र - छात्र संबंध तथा छात्र सहभागिता पर आधारित होनी चाहिए। इनको आधार - बनाकर अर्थशास्त्र के शिक्षण में निम्नलिखित शिक्षण - विधियों का प्रयोग किया जाता है —

1. पाठ्य - पुस्तक विधि (Textbook method),
2. व्याख्यान विधि (Lecture method),
3. प्रयोगशाला विधि (Laboratory method),
4. योजना विधि (Project method),
5. समस्या - समाधान पद्धति (problem Sovling method),
6. विचार - विमर्श पद्धति (Discussion method),
7. आगमन - निगमन पद्धति (Inductive and Deductive method),
8. विश्लेषणात्मक व संश्लेषणात्मक पद्धति (Analytic and Synthetic method)
9. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति (Socialized recitation method);

1. पाठ्य - पुस्तक पद्धति

बहुधा यह देखा जाता है कि भारत में समस्त शिक्षण - कार्य पाठ्य - पुस्तक पद्धति से किया जाता है, परन्तु यह कथन अस्पष्ट सा प्रतीत किया जाता है, क्योंकि शिक्षण शिक्षण - पद्धति का उपयोग पाठ्य - पुस्तक को आधार बनाकर किया जा सकता है। अतः पाठ्य - पुस्तक वह साधन है जिसके द्वारा किसी निश्चित लक्ष्य या तथ्य को प्राप्त किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि पाठ्य - पुस्तक विधि एक स्वतन्त्र शिक्षण - विधि नहीं है बल्कि यह वह साधन है, जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। पाठ्य - पुस्तकों द्वारा बालक मानव के संकलित विचारों का अध्ययन करता है। यह अर्थशास्त्र की एक सरल एवं सुगम विधि है। इसके द्वारा छात्र कम - से - कम समय में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

में अधिकतम ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तकों के द्वारा बच्चों में स्वतन्त्र अध्ययन की आदत का निर्माण होता है। इस विधि में अर्थशास्त्र की किसी एक पुस्तक को पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षक छात्रों को किसी एक पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षक छात्रों को किसी एक पाठ या अध्ययन को पढ़ने के लिए दे देता है। बालक मौन-पठन द्वारा उस पाठ की विषय-वस्तु को आत्मसात् करने में प्रयत्न करते हैं। इस प्रक्रिया के लिए छात्रों को पर्याप्त समय प्रदान करना चाहिए। जब समस्त बालक उस पाठ का अध्ययन समाप्त कर लेते हैं, तब शिक्षक छात्रों की बोध-ग्राहता की प्रश्नों द्वारा परीक्षा लेता है। इस परीक्षा में छात्रों को अपनी पाठ्य-पुस्तक की सहायता नहीं लेने दी जाती है। इस विधि के अंतर्गत सस्वर-पठन की प्रणाली को भी अपनाया जा सकता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक कठिन शब्दों एवं स्थलों की व्याख्या करता चलता है तथा दृष्टान्तों एवं उदाहरणों की सहायता से उनको स्पष्ट कर देता है। इस प्रणाली से भी पाठ की समाप्ति के पश्चात् बोध-प्रश्नों द्वारा परीक्षा ली जाती है और इनके उत्तरों की सहायता से वह श्यामपट पर संक्षिप्त सारांश तैयार कर देता है। शिक्षक इस सारांश को छात्रों को अपनी पुस्तिकाओं में लिखने के लिए आदेश दे सकता है, जिससे छात्रों की अभिव्यंजना शक्ति विकसित हो जाए तथा वे विस्मृति हो जाए तथा वे विस्मृत के दोषों से दूर कर सकें।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

इस विधि का मूलभूत सिद्धांत शिक्षण-प्रक्रिया की मितव्ययता है। इसमें छात्र कम से कम समय में तथा बिना किसी कठिन प्रयास से अधिकतम ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। दूसरे इस विधि द्वारा छात्रों को ज्ञान-राशि व्यवस्थित रूप में प्राप्त होती है, क्योंकि पाठ्य-पुस्तकों में ज्ञान-राशि किसी न किसी व्यवस्था पर आधारित होती है।

पाठ्य-पुस्तक विधि में पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग (Use of textbook in Textbookbook method)

सामान्यतः इस विधि का प्रयोग दो प्रणालियों के आधार पर किया जाता है। प्रथम, एकाकी पाठ्य-पुस्तक प्रयोग तथा द्वितीय बहु पाठ्य-पुस्तक प्रयोग एकाकी पाठ्य-पुस्तक प्रणाली में केवल एक ही पाठ्य-पुस्तक को आधार बनाया जाता है। इसके प्रयोग द्वारा अध्यापक छात्रों का ध्यान विषय-वस्तु पर आकृष्ट करने की आज्ञा प्रदान करता है। इस प्रणाली के विपक्ष में यह कहा जाता है कि इसके द्वारा छात्रों में मुद्रित पृष्ठों के प्रति दासता की भावना विकसित हो जाती है। उनमें लिखी विषय-वस्तु को ही सत्य एवं अकाट्य मानने की धारणा विकसित हो जाती है और उनका अध्ययन का दृष्टिकोण संकीर्ण बन जाता है। बहु पाठ्य-पुस्तक प्रणाली में इस प्रकार के दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया गया है। दूसरी प्रणाली में एक पुस्तक के स्थान पर बहुपाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग से सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि छात्र एक पाठ्य-पुस्तक को ही अन्तिम निर्णायक शक्ति नहीं मानते वरन् अपने विषय का अध्ययन विभिन्न पुस्तकों द्वारा करके एक एक अन्तिम निष्कर्ष निकालना सीख जाते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

गुण (Merits) — (1) पाठ्य-पुस्तक पद्धति के छात्रों में अध्ययन की निपुणता बढ़ती है तथा उनमें पढ़ने का स्वभाव उत्पन्न होता है, क्योंकि पाठ्य-पुस्तकें छात्रों के दृष्टिकोण से ही लिखी जाती हैं।

(2) इससे छात्र स्वयं सक्रिय रहकर ज्ञान अर्जित करते हैं।

(3) इससे छात्रों में स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।

(4) इसके द्वारा छात्रों को अभ्यासों की विषय-वस्तु का ज्ञान व्यवस्थित रूप से होता है।

(5) पाठ्य-पुस्तकें छात्रों के कार्य में व्यवस्था उत्पन्न करती हैं।

(6) इसके द्वारा छात्रों तथा शिक्षकों के समय की बचत होती है।

(7) इसके द्वारा छात्रों की बोध-ग्राह्यता की साथ ही साथ परीक्षा रहती है।

(8) इस पद्धति द्वारा छात्रों को इस बात की ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि किसी प्रश्न के लिए कितनी विषय-सामग्री लिखनी है तथा उसको किस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए।

(9) इसके द्वारा छात्रों की स्मरण-शक्ति का विकास होता है।

दोष (Demerits) — (1) यह पद्धति छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न नहीं करती है तथा उनके मानसिक अन्तरिक्ष को व्यापक बनाने में असमर्थ रहती है।

(2) यह पद्धति छात्रों के पूर्व ज्ञान को जाग्रत करने में असमर्थ रहती है।

(3) यह पद्धति शिक्षण के सूत्रों, जैसे - 'सरल से कठिन की ओर', मनोवैज्ञानिक से तर्कसम्मत क्रम की ओर', ज्ञात से अज्ञात की ओर', विशिष्ट से सामान्य की ओर', 'विश्लेषण से संश्लेषण'

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

की ओर आदि की अपेक्षा करती है।

(4) इस पद्धति द्वारा छात्रों में रटने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।

(5) इसके द्वारा छात्र पाठ्य-पुस्तकों से तथ्यों व भावों का अन्धानुकरण करने लगते हैं।

(6) इसके प्रयोग से कक्षा का वातावरण अरुचिकर तथा नीरस रहता है।

2. व्याख्यान पद्धति

शिक्षण में इस पद्धति का प्रयोग प्राचीनकाल से होता चला आ रहा है। आजकल भी भारतीय शिक्षालयों में इस पद्धति ने महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रखा है। व्याख्यान का तात्पर्य पाठ को भाषण के रूप में पढ़ाने से है। इसमें शिक्षक अपने मुख से बात कहकर समझाता है। वाइनिंग व वाइनिंग इसको कथन विधि (Telling method) के नाम से पुकारते हैं। व्याख्यान विधि अर्थशास्त्र के शिक्षण में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। इस विधि द्वारा शिक्षक गहन एवं सूक्ष्म विषय-वस्तु को सरल तथा सुबोध बना सकते हैं। शिक्षक इसके प्रयोग में व्याख्यान के साथ-साथ स्पष्ट प्रश्नों द्वारा पाठ का विकास करता चलता है तथा छात्रों को भी प्रश्नों पूछने के लिए प्रोत्साहित करके विषय-वस्तु की विवेचना करता है। शिक्षा की प्रगतिशील विचारधाराओं के समर्थकों का मत है कि यह पद्धति शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है। उनका कहना है कि इसमें बालक निष्क्रिय श्रोता मात्र बना रहता है। परन्तु, यह तर्क उपयुक्त-सा प्रतीत नहीं होता, क्योंकि यह पद्धति शिक्षा मनोवैज्ञानिक के सिद्धान्तों के विपरीत नहीं है। इसमें बालकों की मानसिक क्रिया होती है। यदि शिक्षक पूर्ण तैयारी

तथा रोचक ढंग से अपने व्याख्यान को अपने छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करेगा और उनको सक्रिय रखने के लिए उनसे प्रश्न पूछता रहेगा एवं छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करता रहेगा तो यह आरोप दूर किया जा सकता है। इस आरोप का दोषी शिक्षक है न कि पद्धति।

इस पद्धति में बच्चों की कर्णेन्द्रिय जागरूक रहती है। इसके द्वारा हाथ तथा मस्तिष्क का भी सम्बंध स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार इसमें बच्चों की कई इन्द्रियाँ सक्रिय रह सकती है। सुन्दर व्याख्यान वक्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ बालकों के मस्तिष्क में स्थान ग्रहण करता है।

प्रयोग — अब प्रश्न यह है की अर्थशास्त्र शिक्षण में यह पद्धति कब प्रयुक्त की जाए। इस विषय में यह कहा जा सकता है की इसका प्रयोग निम्नलिखित अवसरों पर करना चाहिए

(i) इसका प्रयोग किसी बड़ी इकाई या लम्बे प्रकरण या पुनर्विलोकन देने के लिए करना चाहिए।

(ii) इसका प्रयोग अर्थशास्त्र के लगभग प्रत्येक प्रकरण या विषय में छात्रों को अध्ययन को परिपूरित करने के लिए किया जाना चाहिए।

(iii) व्याख्यान पद्धति का प्रयोग बालकों के समय को बचाने के लिए भी किया जाना चाहिए।

(iv) इसके द्वारा विषय की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण भी किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ, आर्थिक पदों की संख्या, धन, आवश्यकता, मूल्य आदि का स्पष्टीकरण।

(v) किसी नवीन पाठ की प्रस्तावना से परिचित कराने के लिए व्याख्यान पद्धति का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उपयोगी हो सकता है।

(vi) छात्रों के स्वाध्यन के लिए नवीन कार्य-निर्धारण हेतु इस विधी का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके द्वारा उस निर्दिष्ट पाठ या पृष्ठों का संक्षिप्त परिचय तथा मुख्य बातों का ज्ञान दिया जाता है। जिससे छात्रों को यह ज्ञात हो जाए कि उन्हें इस पाठ या कार्य में किन-किन बातों पर का अध्ययन करना है।

(vii) इस पद्धति का प्रयोग किसी विषय का प्रकरण का सारांश देने के लिए भी किया जा सकता है।

(viii) छात्रों में पाठ या विषय के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए भी व्याख्यान विधी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3. प्रयोगशाला विधी

शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृति ने प्रत्येक विषय के लिए अपनी प्रयोगशाला स्थापित करने को बाध्य किया है। जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानों के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सामाजिक विषयों के लिए भी आधुनिक काल की विचारधारा के अनुसार प्रयोगशाला का होना आवश्यक है इसके पक्ष में यह कहा जा सकता है की यदि प्रत्येक विषय की प्रयोगशाला पृथक रूप से स्थापित की जाएगी तो इससे छात्रों के लिए उस विषय के लिए ऐसा आनन्दमय वातावरण स्थापित हो जाएगा, जिससे वे सरलता एवं सुगमता से क्रिया द्वारा सीख सकते है। अर्थशास्त्र भी एक विज्ञान है, चाहे वह, प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति इतना विशुद्ध न हो, परंतु विज्ञान की एक उदार परिभाषा के अंतर्गत यह

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

भी विज्ञान ही है। इस कारण अर्थशास्त्र के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता है; दूसरे यदि इसकी व्यवस्था नहीं होगी तो शिक्षक को अर्थशास्त्र की सामग्री को एक कक्ष से दूसरे कक्ष में ले जाने में पर्याप्त समय लगेगा तथा सामग्री के टूटने - फूटने का भी डर रहेगा। तीसरे, प्रयोगशाला द्वारा अर्थशास्त्र व वातावरण स्थापित किया जाएगा तो उसकी शिक्षा के लिए अति आवश्यक है। आधुनिक शैक्षणिक विचारधारा के अनुसार अध्यापक का परम कर्तव्य है की वह छात्रों के लिए ऐसा वातावरण या ऐसी स्थिति उत्पन्न करें जिसमें छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित कर सके। इस प्रकार प्रयोगशाला वह साधन है; जिसके द्वारा अर्थशास्त्र का शिक्षक बालकों की शिक्षा के लिए उपयुक्त स्थिति एव वातावरण उत्पन्न कर सकता है। अब प्रश्न यह है की अर्थशास्त्र की प्रयोगशाला में किन - किन वस्तुओं का समावेश होना चाहिए ? इसके उत्तर में हम निम्नलिखित बातों को प्रस्तुत कर सकते हैं —

(i) सामान्य कक्ष से एक बड़ा कक्ष होना चाहिए, जिसमें एक समय में 30 या 40 बालक स्वाध्ययन कर सकें। इसके अतिरिक्त उसके प्रायोगिकी कार्य करने के लिए मेज तथा कुर्सियों की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

(ii) श्यामपट या चाकबोर्ड

(iii) सूचना पट

(iv) चार्ट, मॉडल, चित्र, मानचित्र और रेखाकृतियाँ

(v) अर्थशास्त्र से संबंधित पत्र - पत्रिकाएँ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रयोग — इस पद्धति के प्रयोग के लिए शिक्षक कार्यों का निर्धारण करता है। अध्यापक कार्य का निर्धारण करके उसके विषय में एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जिसमें यह भी बात देता है की इस कार्य की पूर्ति में अमुक - अमुक वस्तुओं की सहायता अपेक्षित है तथा अमुक - अमुक स्थान से सामग्री प्राप्त की जा सकती हैं।

गुण — (i) इसके द्वारा छात्र स्व - क्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं।

(ii) इसका प्रयोग पर छात्र पुस्तकालय का उपयोग करना सीख जाते हैं।

इस पद्धति द्वारा वर्तमान परीक्षा - प्रणाली के दोषों को दूर किया जा सकता हैं। इन कार्यों की पूर्ति के आधार पर छात्रों को एक कक्षा से दूसरी कक्षा के लिए उन्नति प्रदान की जाती हैं।

4. योजना पद्धति

इस पद्धति के जन्मदाता श्री डब्ल्यू० एच० किलपैट्रिक (W.H. Kilpatrick) हैं। डिवी के प्रयोजनवाद के सिद्धांतों के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया गया। इसका निर्माण विद्यालय के परम्परागत एवं शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया है। इसमें छात्रों की क्रियाशीलता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। इसमें शिक्षक परिस्थितियों के निर्माणकर्ता तथा मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता हैं।

अतः अर्थशास्त्र - शिक्षण में योजना - पद्धति के प्रयोग के बहुत अवसर हैं। उदाहरणार्थ सहकारी संघ की दुकान, सिंचाई के साधन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

हमारा भोजन, यातायात के साधन आदि

5. समस्या - समाधान पद्धति

समस्या - समाधान पद्धति की योजना पद्धति से पर्याप्त समानता रखती है। इन दोनों पद्धतियों में अन्तर इस बात का है कि योजना पद्धति में प्रायोगिक कार्य को महत्व प्रदान किया जाता है। इस प्रायोगिक कार्य एक वास्तविक स्थिति में सम्पन्न किया जाता है, जबकि समस्या पद्धति में मानसिक निष्कर्षों पर अधिक बल दिया जाता है। अतः, इस पद्धति का सबसे प्रमुख गुण - मानसिक क्रिया एवं आलोचनात्मक चिन्तन है। अर्थशास्त्र - शिक्षण में इस पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इसका प्रमुख ध्येय बालकों को जीवन की वास्तविक समस्याओं से परिचित कराना है।

6. विचार - विमर्श पद्धति

आधुनिक शैक्षिक विचार धारा के अनुसार बालक को निष्क्रिय श्रोता नहीं माना जाता है वरन उसको जीवन की प्रक्रिया में सक्रिय बनाए रखने पर बल दिया जाता है। बालक जिस ज्ञान को क्रिया करके प्राप्त करता है वह स्थायी रहता है। बालक को सक्रिय बनाए रखने के लिए विभिन्न क्रियात्मक शिक्षण - विधियों का प्रयोग किया जाता है।

अतः इस पद्धति में प्रयोग के लिए नेता, भाग लेने वाले, समस्या तथा उससे सम्बंधित सामग्री की आवश्यकता है। विचार - विमर्श के लिए छात्रगण स्वयं या शिक्षक समस्या प्रस्तुत कर सकता है। समस्या के प्रस्तुत होने के उपरान्त

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शिक्षक उनके उद्देश्यों पर प्रकाश डालेगा और उनसे संबंधित सामग्री के स्रोतों को बतलाएगा। छात्र इन विभिन्न स्रोतों से समस्या से संबंधित सामग्री का अध्ययन करेंगे।

7. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति

वेस्ले (Wesley) के अनुसार समाजीकृत अभिव्यक्ति एक आदर्श है, जो शिक्षण में ऐसे प्रयोग की कल्पना करता है जिसमें कक्षा के समस्त छात्र सहयोग एवं सद्भावना से ज्ञान अर्जित कर सकें। इसके द्वारा कक्षा के पर्यावरण की औपचारिकता को समाप्त किया जाता है तथा इसके स्थान पर स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है, जिससे छात्र अपनी प्रकृति, रुचि तथा सहयोग के साथ ज्ञानोपार्जन कर सकें। इस पद्धति का मूलभूत सिद्धांत समाजीकरण है। अर्थशास्त्र - शिक्षण के लिए यह पद्धति बहुत उपयोगी है। अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, जिसका ध्येय छात्रों में सामाजिकता उत्पन्न करता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner